9

प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों का अध्ययन

अरुण कुमार मिश्र*

आजादी प्राप्त करने के पश्चात् हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा का जैसा विस्तार हुआ वैसा किसी अन्य देश में नही हुआ। अब तक शिक्षा के विकास के लिए अथक प्रयास तथा अनेक संसाधन जुटाए गए हैं। विभिन्न सरकारी एवं गैरसरकारी प्रयासों द्वारा शिक्षा के विस्तार में कई गुना वृद्धि भी हुई, किंतु शिक्षा में अपेक्षित स्तर पर गुणवत्ता संवर्धन नहीं हो सका। प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए प्रथम आवश्यकता है, शत-प्रतिशत बच्चों के लिए विद्यालय उपलब्ध कराना, द्वितीय आवश्यकता है शत-प्रतिशत बच्चों को विद्यालय में रोके रखना एवं उन्हें अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण कराना। परंतु विडंबना यह है कि हमारे देश में नामांकन के बाद भी विद्यार्थी बीच में ही विद्यालय छोड़े देते है। प्राथमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण के मार्ग में अपव्यय की समस्या सबसे गंभीर बाधा हैं। इसके प्रमुख कारणों में लैंगिंक भेदभाव, अशिक्षा, गरीबी, जाति-वर्ग, विद्यालयों में संसाधनों का अभाव, कर्तव्यनिष्ठा की कमी, घरेलू कार्य, जागरूकता का अभाव, अभिभावकों की उदासीनता आदि हैं। इन कारणों को दूर किए बिना विद्यालय छोड़ने की समस्या से छुटकारा नही मिल पाएगा।

यह निर्विवाद सत्य है कि शिक्षा किसी भी राष्ट्र की वह आंतरिक ऊर्जा है जिसके सहारे वह विकास के पथ पर अग्रसर होता है शिक्षा के सभी स्तरों में प्राथमिक शिक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका कार्य किसी इमारत की नींव की ईंट के समान है, इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमारे भारतीय संविधान के 86 वें संविधान संशोधन अधिनियम 2002 द्वारा 06-14 आयु वर्ग के सभी बच्चों के लिए शिक्षा के मौलिक अधिकार का प्रावधान किया गया है। यह ऐतिहासिक विधान 6 से 14 वर्ष तक के प्रत्येक बच्चे को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने के केंद्र और राज्य सरकारों के दायित्व को रेखांकित करता है।

**प्रवक्ता* (बी.एड.विभाग), राधेहरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर (उ.सिं.न.), उत्तराखण्ड

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सरकार द्वारा किए गए विभिन्न प्रयासों के फलस्वरूप प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में विशेषकर शिक्षण संस्थाओं, शिक्षकों की संख्या, विद्यालयों में नामांकन आदि में प्रभावी रूप से बढ़ोतरी हुई है लेकिन जनसंख्या में इससे अधिक तेज़ी से वृद्धि होने के कारण यह अप्रभावी रही है। सरकार द्वारा करोड़ों रूपये खर्च किए जा रहे हैं परंतु उसके नतीजे अपेक्षित एवं संतोषजनक नहीं हैं।

प्राथमिक शिक्षा की परिधि में सभी बच्चों को शामिल करने के लिए सरकारी स्तर पर कई योजनाएँ और कार्यक्रम संचालित हैं, जिनमें सर्वशिक्षा अभियान सर्वप्रमुख है, जिसके अंतर्गत मिड-डे-मील, छात्रवृत्ति, नि:शुल्क पाठ्यपुस्तकें, शिक्षकों और शिक्षामित्रों की नियुक्ति आदि का आधा-अधूरा क्रियान्वयन जारी है।

प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए प्रथम आवश्यकता है शत-प्रतिशत बच्चों के लिए विद्यालय उपलब्ध कराना, द्वितीय आवश्कता है शत-प्रतिशत बच्चों को विद्यालयों में रोके रखना एवं उन्हें अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण कराना, परंतु विडंबना यह है कि हमारे देश में नामांकन के बाद भी अधिकतर बच्चे बीच में ही विद्यालय छोड़ देते हैं और जो बने रहते हैं वे भी निश्चित समय में पाठ्यक्रम पूरा नहीं करते हैं। अत: शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों का अध्ययन करना अत्यधिक आवश्यक है।

समस्या कथन–"प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों का अध्ययन"

समस्या का परिभाषीकरण

प्राथमिक विद्यालयों से तात्पर्य परिषदीय विद्यालयों से है।

विद्यार्थियों से आशय कक्षा 1 से 5 तक के सभी जाति के छात्र और छात्राओं से है।

विद्यालय छोड़ने से आशय कक्षा 1 में कुल नामांकित विद्यार्थियों का अगली कक्षा में शिक्षा न प्राप्त करने से है अर्थात वे विद्यार्थी जो कक्षा 5 तक की शिक्षा पूर्ण करने से पूर्व ही बीच में पढ़ाई छोड़ देते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए है–

1. प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों का लिंग के आधार पर अध्ययन करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों का सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर अध्ययन करना।
3. प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों का जाति-वर्ग के आधार पर अध्ययन करना।
4. प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों का विद्यालय की स्थिति के आधार पर अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ स्थापित की गईं–

1. प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों में लिंग (छात्र/छात्रा) के आधार पर कोई अंतर नहीं है।
2. प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों में सामाजिक-आर्थिक स्थिति (उच्च/निम्न) के आधार पर कोई अंतर नहीं है।
3. प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों में जाति-वर्ग (सामान्य/आरक्षित) के आधार पर कोई अंतर नहीं है।
4. प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों में विद्यालय की स्थिति (सुविधा संपन्न/सुविधा रहित) के आधार पर कोई अंतर नहीं है।

शोध कार्य की परिसीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन की भी कुछ सीमाएँ निश्चित की गई हैं, जो कि निम्नांकित है–

1. प्रस्तुत अध्ययन में राज्य सरकार द्वारा संचालित परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों को चयनित किया गया है।
2. परिषदीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
3. न्यायादर्श का विभाजन केवल छात्र/छात्रा, उच्च/निम्नवर्ग, सामान्य/आरक्षित, सुविधा संपन्न/सुविधा रहित विद्यालय के आधार पर ही किया गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में केवल विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के कारणों का अध्ययन किया गया है।

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। इसके अंतर्गत प्राथमिक समंकों का प्रयोग करके इस तथ्य का निर्वचन किया गया कि विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के लिए कौन-कौन-से कारक जिम्मेदार हैं। समस्या के संभावित कारकों के रूप में लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्तर, जाति-वर्ग एवं विद्यालयी स्थिति का अध्ययन किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के अंतर्गत शाहजहाँपुर जनपद के नगर क्षेत्र एवं 15 विकासखंडों में स्थित समस्त परिषदीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक नामांकित वे विद्यार्थी हैं जिन्होंने विद्यालय में प्रवेश लिया था परंतु कक्षा 5 तक की शिक्षा पूर्ण करने से पूर्व ही विद्यालय छोड़ दिया है।

न्यायादर्श

प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। इसके अंतर्गत शाहजहाँपुर जनपद के नगर क्षेत्र एवं 15 विकासखंडों में स्थित समस्त परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में से 10 प्रतिशत विद्यालयों का क्रमानुसार दैव प्रतिचयन विधि से चयन किया गया था तथा उन विद्यालयों में नामांकित विद्यार्थियों में से विद्यालय छोड़ने वाले 50

प्रतिशत विद्यार्थियों का चयन विद्यालयी अभिलेखों के आधार पर लाटरी विधि द्वारा किया गया, तत्पश्चात् शोधकर्त्ता ने स्वयं संपर्क कर विद्यालय छोड़ने के कारणों का अध्ययन किया।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक विद्यालय छोड़ने के कारणों का मापन करने हेतु अनुसंधानकर्त्ता द्वारा साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया है।

समंकों का संग्रहण

अनुसंधानकर्त्ता ने अध्यापकों का साक्षात्कार विद्यालय में लिया तथा विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों से घर में संपर्क कर उनका साक्षात्कार लिया और साक्षात्कार अनुसूची भरी।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

साक्षात्कार अनुसूची के प्रशासन से प्राप्त प्राथमिक समंकों का उनकी विशेषतानुसार वर्गीकरण करने के पश्चात् उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों जैसे- मध्यमान, प्रमाप विचलन तथा प्रमाप विभ्रम आदि के द्वारा विश्लेषण किया गया। परिकल्पना परीक्षण हेतु क्रांतिक अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना परीक्षण-1

सारणी संख्या-1 से स्पष्ट होता है प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में छात्रों के विद्यालय छोड़ने का औसत 18.328 है, जो छात्राओं के विद्यालय छोड़ने के औसत 20.756 की तुलना में 2.428 कम है। माध्य के अंतर का प्रमाप

सारणी संख्या-1

विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों का लिंग के आधार पर अध्ययन

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यममान	प्रमाप विचलन	माध्य अंतर	प्रमाप विभ्रम	क्रांतिक अनुपात	5 प्रतिशत सार्थकता स्तर (1.96)
छात्र	128	18.328	3.761	2.428	0.531	4.531	सार्थक
छात्रा	131	20.756	4.811				

परिकल्पना परीक्षण -2

सारणी संख्या-2

विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों का सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर अध्ययन

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यममान	प्रमाप विचलन	माध्य अंतर	प्रमाप विभ्रम	क्रांतिक अनुपात	5 प्रतिशत सार्थकता स्तर (1.96)
उच्च	57	18.474	4.147	1.387	0.635	2.185	सार्थक
निम्न	202	19.861	4.537				

विभ्रम 0.536 है, जिसके आधार पर परिकलित क्रांतिक अनुपात 4.531 है, जो 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर निर्धारित क्रांतिक मान 1.96 से अधिक हैं अत: उपर्युक्त शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों की तुलना में छात्राओं के विद्यालय छोड़ने की दर अधिक है।

सारणी संख्या-2 से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों में उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने का औसत 18.474 है, जो निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के औसत 19.861 की तुलना में 1.387 कम है। माध्य के अंतर का प्रमाप विभ्रम 0.635 है, जिसके आधार पर परिकलित क्रांतिक अनुपात 2.185 है जो 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर निर्धारित होती है। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों में उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों की तुलना में निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने की दर अधिक है।

परिकल्पना परीक्षण -3

सारणी संख्या-3

विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों का जाति-वर्ग की स्थिति के आधार पर अध्ययन

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यममान	प्रमाप विचलन	माध्य अंतर	प्रमाप विभ्रम	क्रांतिक अनुपात	5 प्रतिशत सार्थकता स्तर (1.96)
सामान्य	74	18.081	4.239	2.076	0.592	3.508	सार्थक
आरक्षित	185	20.157	4.458				

उपरोक्त सारणी संख्या-3 से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों में सामान्य जाति-वर्ग के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने का औसत 18.081 है, जो आरक्षित जाति-वर्ग के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के औसत 20.157 की तुलना में 2.076 कम है, माध्य के अंतर का प्रमाप विभ्रम 0.592 है, जिसके आधार पर परिकलित क्रांतिक अनुपात 3.508 है जो 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर निर्धारित क्रांतिक मान 1.96 से अधिक है। अत: उपर्युक्त शून्य

परिकल्पना परीक्षण -4

सारणी संख्या-4

विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों का विद्यालयी स्थिति के आधार पर अध्ययन

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यममान	प्रमाप विचलन	माध्य अंतर	प्रमाप विभ्रम	क्रांतिक अनुपात	5 प्रतिशत सार्थकता स्तर (1.96)
सुविधा संपन्न	72	18.528	4.950	1.434	0.659	2.175	सार्थक
सुविधा रहित	187	19.962	4.210				

परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों में समान्य जाति-वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में आरक्षित जाति-वर्ग के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने की दर अधिक है।

उपरोक्त सारणी संख्या-4 से स्पष्ट होता है कि सुविधा संपन्न प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने का औसत 18.528 है, जो सुविधा रहित प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने के औसत 19.962 की तुलना में 1.434 कम है। माध्य के अंतर का प्रमाप विभ्रम 0.659 है, जिसके आधार पर परिकलित क्रांतिक अनुपात 2.175 है, जो 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर निर्धारित क्रांतिक मान 1.96 से अधिक हैं। अत: उपर्युक्त शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निषकर्षत: यह कहा जा सकता है कि सुविधा संपन्न प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में सुविधा रहित प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय छोड़ने की दर अधिक है।

अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता

- बच्चों के माता-पिता और संरक्षकों (विशेष रूप से निरक्षर) के लिए खाली समय में शिक्षा देने हेतु एक विशेष कार्यक्रम तैयार किया जाना चाहिए। इस कार्यक्रम का उद्देश्य अभिभावकों को इस प्रकार तैयार करना होना चाहिए कि ये अपने बच्चों को शिक्षित करने हेतु तत्पर हो सकें।
- विद्यालयों में विविध पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को अनिवार्य बनाकर शिक्षा को क्रियात्मकता आधारित बनाना चाहिए।
- विद्यालय का वातावरण सहयोग और सहानुभूति पूर्ण हो इसके लिए अध्यापकों में बच्चों के प्रति संवेदनशीलता विकास हेतु विशेष प्रशिक्षण के उपाय अपनाने चाहिए।
- बच्चों को फेल करने की व्यवस्था समाप्त की जाए तथा एक सतत् और व्यापक व्यावहारिक मूल्यांकन व्यवस्था को इसका स्थान लेना चाहिए।
- विद्यालय को बच्चों के घर के पास निर्धारित मानकों के अनुरूप उपलब्ध कराने हेतु गंभीर उपाय करने चाहिए।
- विद्यालय में दंड को पूर्णतया समाप्त करने हेतु प्रभावी कार्ययोजना बनानी चाहिए।
- अध्यापकों को अन्य शिक्षणेत्तर कार्यों से मुक्त करने के लिए कारगर नीति बनानी चाहिए।
- छात्रवृत्ति और मध्याह्न भोजन जैसे आकर्षक कार्यक्रमों को बनाए रखने के लिए छात्रवृत्ति के रूप में रोज एक निश्चित राशि तथा भोजन के मीनू में विविधता लाए जाने का उपाय किया जाना चाहिए।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा को लागू किया जाना चाहिए क्योंकि पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा की धारा में विद्यार्थियों को सम्मलित करने की पूर्व तैयारी का कार्य करती है।

- सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक समारोह तथा विद्यालय के वार्षिक उत्सव के अवसर पर ऐसे कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाने चाहिए जिससे विद्यार्थियों को विद्यालय में अनवरत रखने हेतु ग्रामीण समुदाय के मानस को तैयार किया जा सके।
- जिन परिवारों के 6-14 आयु वर्ग के सभी बच्चे विद्यालय आ रहे हों उन्हें एक ग्रीन कार्ड दिया जाए तथा उन्हें रोजगार कार्यक्रमों, ऋण आदि की सुविधा दिलाए जाने के कार्यक्रमों में प्राथमिकता दी जाए।
- ग्रामीण क्षेत्र में आयोजित किए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम में समयपूर्व विद्यालय छोड़ने पर दी जा रही वार्ताओं में अभिभावकों को भी आमंत्रित किया जाए।
- सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योग-धंधे, फैक्ट्रियाँ, कल-कारखाने लगाने चाहिए, जिससे गरीब परिवारों को रोजगार मिले, उनकी आय में वृद्धि हो और वे अपने बच्चों को अर्थोपार्जन हेतु नहीं, अपितु पढ़ने भेजें।
- विद्यार्थियों के लिए विद्यालय में खेलकूद, व्यायाम, योगासन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन करना चाहिए।
- प्राथमिक विद्यालयों में रुचिशील, जागरूक और प्रशिक्षित अध्यापक/अध्यापिकाओं की नियुक्ति की जाए।
- समुदायों, संगठनों, अभिभावकों का अध्यापक, बी.आर.सी. एवं शिक्षाधिकारियों के साथ सतत् विचार-विमर्श होना चाहिए।
- विद्यार्थियों के साथ लिंग, जाति, धर्म, अमीरी-गरीबी, आदि किसी भी प्रकार से भेद-भाव न किया जाए।
- शिक्षकों की उपस्थिति दर्ज किए जाने के लिए एक अत्याधुनिक योजना विकसित करनी होगी ताकि निश्चित समय पर उपस्थित न होने पर उनकी उपस्थिति दर्ज न हो सके।
- प्राथमिक विद्यालयों को निजी शिक्षण संस्थाओं के समान सुविधा संपन्न बनाना चाहिए जिससे विद्यार्थी आकर्षित होकर प्रतिदिन विद्यालय आएँ।

अत: स्पष्ट है कि विद्यार्थियों का विद्यालय छोड़ना एक गंभीर शैक्षिक समस्या है जो देश के भावी कंधों को कमजोर कर रही है अर्थात् वर्तमान के साथ-साथ देश का भविष्य भी बिगाड़ रही है। भारत में इस समस्या की जड़ में परंपरागत कारण ही विद्यमान हैं। माता-पिता की अशिक्षा, गरीबी, विद्यालयों का अनाकर्षक वातावरण, सिर्फ किताबी शिक्षा, सुविधा विहीनता आदि इस समस्या का प्रमुख कारण है।

इसके साथ ही शिक्षा की समग्र प्रक्रिया का स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप और जीवन की आवश्यकताओं से न जुड़ा होना समस्या का एक और पक्ष है।

अत: आवश्यक है कि शिक्षण व्यवस्था में छोटे-छोटे सुधारों के स्थान पर एक स्पष्ट, समग्र और दीर्घकालीन नीति बनाने की ताकि विद्यालय छोड़ने की समस्या को दूर किया जा सके।